eISSN 3049-2610
Research Stream
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 03, Issue 01, March 2026

लोकसाहित्य और डिजिटल युग को चुनौतियाँ

डॉ0 मंजुला श्रीवास्तव[1]
[1]असि0 प्रो0–हिन्दी विभाग, दयानन्द गर्ल्स डी0जी0 कॉलेज, कानपुर उ0प्र0

Received: 20 March 2026 Accepted & Reviewed: 25 March 2026, Published: 31 March 2026

Abstract

लोकसाहित्य किसी समाज की सांस्कृतिक आत्मा का जीवंत दस्तावेज होता है। इसमें जनता के जीवन–अनुभव, परम्पराएँ, रीति–रीवाज, लोककथाएँ, गीत, कहावतें और लोकनायक शामिल होते हैं यह पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक परम्परा के माध्यम से प्रसारित होता आया है, इसलिए इसकी सहजता, भावनात्मकता और सामूहिकता इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं। लेकिन डिजिटल युग में जब मोबाइल और सोशल मीडिया सर्वसुलभ हो गये हैं, तब लोक साहित्य के सामने कई नई चुनौतियाँ उत्पन्न हो गई हैं, जैसे मौखिक परम्परा का क्षरण, प्रमाणीयता का संकट, भाषाई और क्षेत्रीय असमानता, वाणिज्यिक दृष्टिकोण का प्रभाव आदि। फिर भी डिजिटल युग में अवसर भी हैं यदि लोक साहित्य को ऑडियो–वीडियो रिकॉर्डिंग, यू–ट्यूब चैनलों, पॉडकास्ट और नई पुस्तकों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाये, तो वह वैश्विक स्तर पर भी जीवित रह सकता है।

बीज शब्द :– लोक साहित्य संस्कृति, परम्परा, डिजिटल युग, चुनौतियाँ, संरक्षण, लोक भावना।

Introduction

लोक साहत्य भारतीय संस्कृति की धरोहर है, जो किसी राष्ट्र को सांस्कृतिक पहचान, अक्षुण्ण रखने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है। लोकसाहित्य के अन्तर्गत जहाँ व्यक्ति के सुख–दुख, राग–आह्यलाद, आशा–निराशा, हर्ष–विषाद विद्यमान होते हैं, वहीं सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ भी, जो राष्ट्र को अपनी पहचान देते हैं, किन्तु वर्तमान में आधुनिकता दौर वैश्वीकरण के कारण सामाजिक संस्कृतियों में संक्रमण आ यगा है साथ ही परम्परा को पुरातन या आउटडेटेड कहकर अवरोध के स्वर भी भी प्रखर हुए हैं। लोकसाहित्य के संकलन की ओर पश्चिम में बहुत पहले ही विद्वानों का ध्यान गया था और उन्होंने अपने निजी एवं संस्थागत प्रयासों से लोक साहित्य का संकलन एवं संरक्षण किया। भारतीय लोक साहित्य के संकलन और शोध का काम शुरू करने वालों में अंग्रेज सिविलियन और ईसाई मिशनरी प्रमुख थे। भारत में कर्नल टाड तथा विलियम जॉन्स द्वारा कलकत्ते में 'एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल' संस्थानों में लोक साहित्य संरक्षण का काम किया।

भारतीय लोकगीतों तथा लोककथाओं के संग्रहकर्ताओं में सर जार्ज ग्रियरसन का नाम अत्यन्त प्रसिद्ध है। 'लिग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया' नामक इनका ग्रन्थ एक अमर कृति है। आज डिजिटल माध्यमों ने जीवन हर क्षेत्र में प्रवेश कर लिया है। लोक साहित्य मौखिक परम्परा पर आधारित होता है, जैसे लोकगीत, लोककथाएँ, मुहावरें, कहावतें, पहेलियाँ, लोक नाटक आदि इसके प्रमुख रूप हैं। डिजिटल युग में इण्टरनेट, सोशल मीडिया, मोबाइल एप्लीकेशन, ई–पत्रिकायें, ऑडियो7वीडियो प्लेटफॉर्म्स ने साहित्य के प्रसार के नये द्वार खोले हैं। आज गांव से लेकर महानगर तक हर व्यक्ति के पास जानकारी का सशक्त माध्यम उपलब्ध है। आज गांव का सशक्त माध्यम उपलब्ध है। इसने लोक साहित्य को वैश्विक पहचान दिलाने की

eISSN 3049-2610
Research Stream
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 03, Issue 01, March 2026

सम्भावनाएँ तो बढ़ाई हैं, पर इसके साथ ही कई नई चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। अब लोकगीत केवल गांव की चौपालों तक सीमित नहीं, बल्कि इण्टरनेट के माध्यम से वैश्विम मंच पर पहुंच गये हैं। यद्यपि यह एक सकारात्मक परिवर्तन प्रतीत होता है, परन्तु इसके साथ अनेक चुनौतियाँ भी जुड़ी हुई हैं, सबसे पहले, प्रमाणिकता का संकट है। जब कोई लोकगीत या कथा डिजिटल माध्यम पर अपलोड होती है, तो इसका मूल स्वरूप, भाषा, लय और भावना कई बार बदल जाती है।

कई बार व्यावसायिक आकर्षण या दर्शक बढ़ाने की चाह में लोक तत्वों को तोड़–मरोड़कर प्रस्तुत किया जाता है। इससे लोकसाहित्य की मौलिकता पर खतरा मण्डराने लगता है।

दूसरी बड़ी चुनौती है व्यावसायीकरण की। अब लोकसाहित्य को एक 'मनोरंजन सामग्री' के रूप में देखा जाने लगा है। लोक कलाकारों की भावनात्मक अभिव्यक्ति की जगह 'वायरल वीडियों' और 'फेम' ने ले ली है। यह प्रवृत्ति लोक साहित्य की आत्मा को कमजोर करती है।

तीसरी चुनौती है भाषाई असमानता। डिजिटल मंचों पर अंग्रेजी और शहरी हिंदी का प्रभुत्व बढ़ गया है, जिससे ग्रामीण बोलियां और लोकभाषाएँ धीरे–धीरे हाशिए पर जा रही है। अगर यही प्रवृत्ति जारी रही तो हमारी लोकसंस्कृति की विविधता स्वरूपता में बदल सकती है।

फिर भी डिजिटल युग में लोक साहित्य के लिए सुअवसर भी कम नहीं है। यदि तकनीकी का उपयोग सही दिशा में किया जाए तो लोकसाहित्य के संरक्षण का यह सबसे प्रभावी माध्यम बन सकता है। लोकगीतों, कहावतों, लोक कथाओं और नाटकों को डिजिटल रूप में रिकार्ड करके सुरक्षित रखा जा सकता है। विश्वविद्यालय और संस्थाएँ डिजिटल लोकसाहित्य संग्रह बना रही हैं। इससे आने वाली पीढ़ियाँ अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ी रह सकती है। आज आवश्यकता है कि हम डिजिटल माध्यमों का उपयोग संवेदनशीलता और जिम्मेदारी के साथ करें। लोक साहित्य का डिजिटल अभिलेखन किया जाए। स्थानीय भाषाओं को प्रोत्साहित किया जाए और लोक कलाकारों को उचित मंच और सम्मान दिया जाए। साथ ही, शिक्षा संस्थानों में डिजिटल लोक साहित्य अध्ययन को बढ़ावा देना चाहिए ताकि युवा पीढ़ी न केवल तकनीक से जुड़ी रहे बल्कि अपनी सांस्कृतिक विरासत से भी परिचित हो।

डिजिटल युग ने ज्ञान और सूचना के प्रसार को अद्‌भुत गति प्रदान की है। आज लोकगीत या लोककथा को गांव की सीमाओं से निकालकर इंटरनेट के माध्यम से विश्वभर में पहुँचाया जा सकता है। डिजिटल माध्यमों ने लोकसाहित्य के संरक्षण प्रसार और पुनर्पाठ की नई सम्भावनायें खोली हैं जैसे लोकसाहित्य के डिजिटल अभिलेखागार बनाये जा रहे हैं यू–ट्यूब, स्पोटीफाई, इंस्टाग्राम जैसे प्लेटफार्म लोक कलाकारों को नई पहचान दे रहे हैं। विश्वविद्यालय और सांस्कृतिक संस्थायें लोकसाहित्य के डिजिटलीकरण पर शोध कर रही हैं। लोकसाहित्य किसी राष्ट्र की आत्मा का दर्पण होता है। इसमें निहित कथाएँ गीत और लोकाचार उस समाज की जीवन–दृष्टि और सांस्कृतिक परम्परा को अभिव्यक्त करते हैं।

लोकसाहित्य हमारी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ा हुआ वह जीवंत स्रोत है जो हमें अपनी पहचान को बोध कराता है। डिजिटल युग ने उसके समक्ष एक दोहरी स्थिति उत्पन्न की है–एक ओर अवसरों का विस्तार है, दूसरी ओर अस्तित्व की चुनौती। यह युग तकनीकी प्रगति का है, परन्तु यदि तकनीक का प्रयोग लोकसंवेदना के साथ किया जाए तो यह संकट नहीं, बल्कि एक नवजागरण बन सकता है। डिजिटल मंच

eISSN 3049-2610
Research Stream
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 03, Issue 01, March 2026

लोक साहित्य के पुनर्जीवन का साधन बन सकते हैं, यदि उनमें 'लोक की आत्मा' को संरक्षित रखा जाए। अतः आवश्यक है कि हम तकनीक को साधन बनाकर 'लोक' को साध्य बनाएँ तभी लोक साहित्य अपनी मूल पहचान के साथ आने वाले युगों तक जीवित रह सकेगा।

सन्दर्भ–ग्रन्थ

1. आधुनिक भारतीय संस्कृति–हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली (2019)
2. लोक साहित्य और जनसंस्कृति–शैलेन्द्र कुमार शर्मा, वाणी प्रकाशन (2021)
3. लोक संस्कृति दौर मीडिया–मोहन लाल जोशी, राजकमल प्रकाशन (2020)
4. डिजिटल युग और लोक पम्परा– श्री कांत पाण्डेय, साहित्य भवन, प्रयागराज (2022)
5. लोक संस्कृति और डिजिटल माध्यम–राधेश्याम सिंह, हिंदी अकादमी, दिल्ली (2024)
6. लोक साहित्य एवं लोक संस्कृति–शशिकला जायसवाल, प्रगति प्रकाशन, मेरठ (2024)